Research Article | History | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 9 | September 2025

# भारतीय इतिहास में किन्नर समुदायः सामाजिक भूमिका, औपनिवेशिक दमन और संघर्ष की दृष्टि

**अनुराग जायसवाल**

UGC & NET, स्नातकोतर, इतिहास (स्वर्णपदक प्राप्त), डॉ श्यामा प्रसाद मुख़र्जी विश्वविद्यालय, रांची

## ABSTRACT

यह शोध लेख भारतीय इतिहास में किन्नर समुदाय की भूमिका, उनके सामाजिक–सांस्कृतिक योगदान, औपनिवेशिक दमन और स्वतंत्रता के बाद सामाजिक न्याय की खोज का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में किन्नर समुदाय ने धार्मिक अनुष्ठानों, सांस्कृतिक आयोजनों और प्रशासनिक संरचनाओं में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई। वे केवल मनोरंजन या धार्मिक साधक नहीं थे, बल्कि समाज और शासन में सक्रिय योगदानकर्ता थे।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने किन्नरों को सामाजिक और कानूनी रूप से हाशिये पर धकेल दिया। कानूनों और नीतियों के माध्यम से उनके पारंपरिक अधिकार, आजीविका और सामाजिक पहचान पर प्रतिबंध लगा दिया गया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किन्नर समुदाय ने राजनीतिक आंदोलनों, गुप्तचर गतिविधियों, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक प्रचार के माध्यम से राष्ट्र की सेवा की। इसके बावजूद, मुख्यधारा के इतिहास में उनका योगदान अक्सर उपेक्षित रहा।

यह शोध लेख न केवल किन्नरों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान को उजागर करता है, बल्कि उनके सामाजिक न्याय, समानता और पहचान की निरंतर खोज को भी समग्र रूप में प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन यह संकेत देता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आज़ादी का प्रतीक नहीं थी, बल्कि समाज में न्याय, समानता और सम्मान की स्थापना के लिए पहला कदम भी थी।

**KEYWORDS:** किन्नर समुदाय, भारतीय इतिहास, सामाजिक न्याय, औपनिवेशिक दमन, स्वतंत्रता संग्राम, संवैधानिक अधिकार, सांस्कृतिक पहचान, हाशियाकरण

**प्रस्तावनाः**

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" यह सूत्र सभी के कल्याण और समानता का संदेश देता है। इसी दृष्टि से किन्नर समुदाय का इतिहास विशेष महत्व रखता है। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में वे धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक भूमिकाओं में सक्रिय रहे। अनुष्ठानों, सामाजिक आयोजनों से लेकर राजपरिवार और प्रशासन तक उनकी उपस्थिति प्रभावी थी। किंतु औपनिवेशिक शासन ने उन्हें हाशिये पर धकेल दिया। ब्रिटिश कानूनों ने पारंपरिक अधिकार छीनकर उन्हें अपराधी ठहराया, जिससे सामाजिक–आर्थिक स्थिति और कमजोर हुई। स्वतंत्रता संग्राम में भी किन्नरों ने संदेशवाहक, गुप्तचर, आर्थिक सहयोगी और सांस्कृतिक प्रचारक के रूप में योगदान दिया, जिसे इतिहास में पर्याप्त मान्यता नहीं मिली। आज़ादी के बाद संवैधानिक अधिकार और कानूनी मान्यता मिलने के बावजूद शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वीकार्यता की चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह शोध लेख उनके ऐतिहासिक योगदान, औपनिवेशिक दमन और न्याय व पहचान की निरंतर खोज को रेखांकित करता है, जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

**प्राचीन भारत में किन्नरों की स्थिति**

भारतीय परंपरा में त्रितीय लिंग या नपुंसक का उल्लेख वेदों और पुराणों में मिलता है। मनुस्मृति और अन्य धर्मशास्त्रों में किन्नरों को सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत मान्यता दी गई थी।

- महाभारत में शिखंडीः महाभारत में शिखंडी का चरित्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शिखंडी जन्म से स्त्री थे परंतु परिस्थितियोंवश पुरुष रूप धारण किया और भीष्म पितामह के वध में निर्णायक बने। यह प्रसंग दर्शाता है कि किन्नर या लिंग परिवर्तन की अवधारणा उस समय समाज में अस्वीकार्य नहीं थी।
- रामायण में उल्लेखः रामायण में तब का प्रसंग मिलता है जब भगवान राम वनवास जाते समय अपने अनुयायियों को लौट जाने का आदेश देते हैं। किंतु किन्नर उनके आदेश की व्याख्या नहीं समझ पाए और वहीं रुक गए। 14 वर्ष बाद जब राम लौटे तो उन्होंने किन्नरों की निष्ठा देखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। आज भी दक्षिण भारत में इस प्रसंग को सांस्कृतिक स्मृति के रूप में याद किया जाता है।
- धर्मशास्त्र और कामसूत्रः धर्मशास्त्रों और कामसूत्र में किन्नरों की उपस्थिति को मान्यता मिली थी। यौन विविधता और लिंग की भिन्नताओं को वहाँ नकारा नहीं गया बल्कि जीवन के हिस्से के रूप में स्वीकारा गया।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में किन्नर समाज का स्थान केवल सहिष्णुता का नहीं था, बल्कि वे धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थे।

Copyright© 2025, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

### मध्यकालीन भारत में किन्नरों की भूमिका

मध्यकालीन भारत, विशेषकर दिल्ली सल्तनत और मुगल काल, किन्नरों के लिए अपेक्षाकृत सशक्तिकरण का समय रहा।

- दरबारी संस्कृति में महत्त्वः किन्नर शाही दरबारों में हरम और राजमहलों की सुरक्षा के लिए नियुक्त किए जाते थे। चूँकि उन्हें "स्त्री और पुरुष दोनों की सीमा से बाहर" माना जाता था, इसलिए उन पर राजपरिवार की महिलाओं और संपत्ति की सुरक्षा का भार सौंपा जाता था।
- मलिक काफूरः इतिहास में मलिक काफूर का उल्लेख मिलता है, जो अलाउद्दीन खिलजी का विश्वस्त सेनापति था। वह मूलतः एक किन्नर दास था जिसे बाद में उच्च पद प्राप्त हुआ। उसने दक्कन विजय में अहम भूमिका निभाई।
- सूचना तंत्र में भूमिकाः किन्नरों को गुप्त सूचनाएँ पहुँचाने और दरबारी षड्यंत्रों में शामिल होने का अवसर भी मिलता था। उनकी उपस्थिति महज सांस्कृतिक नहीं, बल्कि राजनीतिक भी थी।
- मुगलकालीन ग्रंथों में उल्लेखः बाबरनामा, अकबरनामा और तुजुक–ए–जहांगीरी में किन्नरों का बार–बार उल्लेख मिलता है। यह दर्शाता है कि वे केवल मनोरंजन का साधन नहीं थे बल्कि प्रशासनिक ढाँचे में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

मध्यकालीन भारत में किन्नरों को अधिकार, सम्मान और संसाधनों तक पहुँच मिली। वे दरबारों में प्रभावशाली बने और कई बार राजनैतिक निर्णयों को प्रभावित भी करते थे।

### औपनिवेशिक काल में किन्नरों का हाशियाकरण

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन भारत के लिए केवल राजनीतिक दमन ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्गठन का भी समय था। पश्चिमी "विक्टोरियन नैतिकता" के प्रभाव में ब्रिटिशों ने भारतीय समाज की विविध यौनिकताओं और लिंग की तरलता को "अनैतिक" और "असामाजिक" मानना शुरू किया।

- क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट, 1871ः इस कानून के अंतर्गत किन्नरों को "क्रिमिनल बाय बर्थ" यानी जन्मजात अपराधी घोषित किया गया।
  - उनके पारंपरिक पेशे (नृत्य, गान, मंगल कार्यों में आशीर्वाद देना) को संदेहास्पद बना दिया गया।
  - उन्हें नियमित रूप से पुलिस स्टेशन में हाजिरी देनी होती थी।
  - उनकी सार्वजनिक गतिविधियों पर कड़ी पाबंदियाँ लगाई गईं।
- सामाजिक बहिष्कारः अंग्रेजी शिक्षा और कानूनों ने भारतीय समाज में भी किन्नरों के प्रति पूर्वाग्रह को और मज़बूत किया। अब उन्हें "अशुद्ध" और "वर्जित" मानकर अलग–थलग किया जाने लगा।
- आर्थिक संकटः पारंपरिक जीविका के साधनों पर प्रतिबंध लगने के कारण वे आर्थिक रूप से संकटग्रस्त हो गए और हाशिये पर धकेल दिए गए।

औपनिवेशिक काल ने किन्नर समुदाय के लिए सम्मान और पहचान से वंचित होने का द्वार खोल दिया। जो समुदाय पहले धार्मिक–सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा था, वह अब "अपराधी" और "संदेहास्पद" की श्रेणी में डाल दिया गया।

### स्वतंत्रता संग्राम में किन्नरों की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किन्नर समुदाय की भूमिका अक्सर अदृश्य रही, फिर भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण थी। 1857 की क्रांति और बाद के आंदोलनों में किन्नर गुप्तचर, संदेशवाहक और आर्थिक सहयोगी के रूप में सक्रिय थे। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और अन्य सेनानियों के साथ उनकी भागीदारी ने स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती दी।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह और नमक आंदोलन में किन्नर समुदाय ने ग्राम स्तर पर जागरूकता फैलाने और विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। उनका सांस्कृतिक योगदान, जैसे लोकगीत और नृत्य, स्वतंत्रता का संदेश फैलाने में सहायक रहा। किन्नरों की यह भागीदारी दिखाती है कि वे केवल मनोरंजन या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं थे, बल्कि राष्ट्रहित में सक्रिय रूप से योगदान करते थे।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किन्नरों ने समाज और प्रशासन दोनों के लिए चुनौती प्रस्तुत की। उनके योगदान का महत्व इसलिए भी बढ़ गया क्योंकि समाज और औपनिवेशिक प्रशासन दोनों ने उन्हें हाशिये पर रखा। उनकी यह अदृश्य क्रांति आज भी भारतीय इतिहास में कम दर्शाई गई है, लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता में इसका योगदान अमूल्य है।

### स्वतंत्रता के बाद का संघर्ष

स्वतंत्रता के पश्चात किन्नरों ने संवैधानिक अधिकार प्राप्त किए, लेकिन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर असमानताएँ बनी रहीं। शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित रहे, सामाजिक कलंक और लैंगिक पूर्वाग्रह ने उनके सार्वजनिक भागीदारी को प्रभावित किया। स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तक पहुँच में भी बाधाएँ थीं।

किन्तु किन्नर समुदाय ने अपने अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष जारी रखा। उन्होंने सांस्कृतिक पुनरुद्धार, शिक्षा और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास किया। यह संघर्ष दिखाता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आज़ादी नहीं थी, बल्कि समाज में सम्मान, पहचान और न्याय स्थापित करने की दिशा में पहला कदम भी थी। किन्नरों की यह यात्रा आज भी जारी है और उनके संघर्ष से यह संदेश मिलता है कि समानता और न्याय कानूनी आदेशों के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता और स्वीकार्यता से ही सुनिश्चित होते हैं।

### सामाजिक न्याय और किन्नर समुदाय की खोज

किन्नर समुदाय की लड़ाई केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी। उनका संघर्ष समानता, सम्मान और पहचान के लिए भी था। स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान ने सामाजिक अधिकारों की खोज को प्रेरित किया। किन्नर समुदाय ने शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सहभागिता के अवसरों की मांग की, जबकि उनकी सांस्कृतिक भूमिकाओं को बनाए रखने का प्रयास जारी रखा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने समानता और गैर–भेदभाव की गारंटी दी, लेकिन वास्तविक सुधार धीरे–धीरे हुआ। शिक्षा, रोजगार और सामाजिक स्वीकार्यता में बाधाएँ बनी रहीं। NALSA v. Union of India (2014) के फैसले ने किन्नरों को थर्ड जेंडर का संवैधानिक दर्जा दिया और कानूनी अधिकार सुनिश्चित किए, लेकिन समाज में पूर्ण समानता अभी भी अधूरी है।

किन्नर समुदाय ने एनजीओ और सामाजिक संगठनों के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अधिकारों के लिए संघर्ष जारी रखा। सांस्कृतिक पुनरुद्धार के प्रयासों से उनकी पारंपरिक भूमिकाएँ जीवित हुईं। Pride Parades और Trans Rights Movements में उनकी भागीदारी सामाजिक स्वीकार्यता बढ़ाने में सहायक रही। यह संघर्ष दिखाता है कि सामाजिक न्याय और समानता की लड़ाई स्वतंत्रता संग्राम के बाद भी जारी रही।

**आगे की राहः**

भारतीय इतिहास और समाज में किन्नर समुदाय की भूमिका को समझना केवल अतीत के पुनर्पाठ तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि वर्तमान और भविष्य की नीतियों और सामाजिक दृष्टिकोण को भी दिशा देनी चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम में किन्नरों की भागीदारी और सामाजिक योगदान हमें यह सिखाता है कि हाशिये पर रखे गए वर्ग भी परिवर्तन और राष्ट्रनिर्माण के महत्वपूर्ण वाहक हो सकते हैं। आज आवश्यकता है कि इस समुदाय को केवल "कल्याणकारी नीतियों" का लाभार्थी न मानकर उन्हें समाज के सक्रिय साझेदार के रूप में पहचाना जाए।

- सबसे पहले, शिक्षा और कौशल विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। किन्नर समुदाय को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में समान अवसर दिए जाएँ और उनके लिए विशेष छात्रवृत्ति तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएँ। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी बल्कि समाज में उनकी भागीदारी भी बढ़ेगी।
- दूसरा, स्वास्थ्य और मानसिक परामर्श सेवाओं को सुलभ बनाया जाना चाहिए। किन्नरों को स्वास्थ्य सेवाओं, विशेषकर यौन और प्रजनन स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाओं तक पहुँच सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।
- तीसरा, सामाजिक स्वीकृति और सांस्कृतिक पुनर्पाठ को बढ़ावा देना चाहिए। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और मीडिया में किन्नर समुदाय के योगदान पर आधारित सामग्री को शामिल किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस समुदाय को कलंकित दृष्टि से नहीं बल्कि सम्मान की दृष्टि से देखें।
- चौथा, राजनीतिक भागीदारी और नीतिगत प्रतिनिधित्व को सुदृढ़ करना होगा। पंचायतों, नगर निकायों और विधानसभाओं में किन्नरों के लिए आरक्षण या विशेष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए द्य

इस प्रकार, आगे की राह केवल संवैधानिक अधिकारों तक सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक स्वीकृति, सांस्कृतिक पुनःस्थापना और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक व्यापक प्रयास है। यही भारतीय लोकतंत्र और सामाजिक न्याय की सच्ची भावना को प्रकट करेगा।

**निष्कर्षः**

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम" — यह श्लोक हमें सिखाता है कि उदारता और समवेदना ही समाज की असली शक्ति है। किन्नर समुदाय का इतिहास दर्शाता है कि हाशिये पर खड़े लोग भी संस्कृति, प्रशासन और स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभा चुके हैं। औपनिवेशिक दमन और हाशियाकरण के बावजूद उन्होंने गरिमा, समानता और न्याय के लिए संघर्ष जारी रखा। स्वतंत्रता के बाद कानूनी मान्यता मिली, पर वास्तविक बराबरी सामाजिक दृष्टिकोण और अवसरों में बदलाव से ही संभव है। इतिहास हमें बताता है कि स्वतंत्रता का पूर्ण अर्थ तभी साकार होगा जब किन्नरों सहित सभी को सम्मान और समान स्थान मिले।

**सन्दर्भ सूचीः**


1. मिशेलराज, एम. (2015). हिस्टोरिकल इवोल्यूशन ऑफ ट्रांसजेंडर कम्युनिटी इन इंडिया. एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज
2. बरुआह, आर. (2024). हिजड़ा लाइव्स इन इंडियाः ए हिस्टोरिकल रीडिंग. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटीज
3. हिंची, जे. (2019). गवर्निंग जेंडर एंड सेक्शुअलिटी इन कॉलोनियल इंडियाः द हिजरा, सी. 1850–1900. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
4. द्विवेदी, श. (2022). किन्नरः अबूझ रहस्यमय जीवन. लोकभारती प्रकाशन
5. अरोनदेकर, अंजलि (2009). फॉर द रिकॉर्डः ऑन सेक्शुअलिटी एंड द कॉलोनियल आर्काइव इन इंडिया. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस